पुराण :-

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम्।
अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गता ॥

पुराण भारत का ऐतिहासिक ग्रन्थ है। पुराणों से ही भारतीय जीवन का आदर्श, भारत की सभ्यता संस्कृति तथा भारत के विद्या वैभव के उत्कर्ष का वास्तविक दर्शन प्राप्त किया जा सकता है। पुराणों के द्वारा ही प्राचीन भारतीयता की झाँकी और प्राचीन समय में भारत के सर्वतोभावेन उत्कर्ष की झलक दृष्टिगोचर होती है। पुराणों में भारत की आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक उन्नति की सर्वोच्चता प्राप्त होती है। पुराण न केवल इतिहास है, अपितु उनमें विश्व कल्याणकारी आधिभौतिक आदि त्रिविध उन्नति का मार्ग भी प्रदर्शित किया गया है। पुरातन काल से ही भारतीय संस्कृति एवं धर्म के विषय में पुराणों का महत्व था, कारण पुराण सनातनधर्म के कल्याणमार्ग रूप कर्म, उपासना तथा ज्ञान का उत्कृष्टता से उपस्थापन प्रस्तुत करते हैं। पुराण वेदों के गम्भीर एवं समाधिगम्य विषयों का विभिन्न भाव, भाषा, अलंकार तथा गाथाओं के द्वारा स्फुटीकरण करते हैं। वास्तव में पुराण वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं। ये पुराण अकेले ही उनके समस्त अर्थों को सरल शब्दों में और कथानक शैली के द्वारा

सुस्पष्ट कर देते हैं—

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् (महा० आदि०-267)

'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि, यास्क तथा पुराणों में इस प्रकार होती है—'पुराण' शब्द का अर्थ है जो वृत्तान्त पहले हो गया हो, उसका वर्णन जिसमें हो वही 'पुराण' है। 'पुरा अपि नवं पुराणम्' से स्पष्ट है कि पुराना होने पर भी जो नवीन हो, वह पुराण है। निरुक्तकार के अनुसार 'पुराणमारव्यानं पुराणम्' अर्थात् जिसमें प्राचीन आख्यान हों, वह 'पुराण' है। 'वायुपुराण' पुराण को स्पष्ट करते हुए कहते हैं—'यस्मात् पुरा ह्यनतीदं पुराणं तेन तत् स्मृतम्' (1.1.183) अर्थात् जो पूर्व में भी सजीव था, वह पुराण कहा गया है। पद्म पुराण के अनुसार 'पुरा परम्परां वष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्' है। ब्रह्माण्ड पुराण ने 'पुरा एतत् अभूत्' अर्थात् 'प्राचीन काल में ऐसा हुआ' कहकर 'पुराण' शब्द को स्पष्ट किया है।

इन समग्र व्युत्पत्तियों की मीमांसा करने से स्पष्ट है कि 'पुराण' का वर्ण्य विषय प्राचीन काल से सम्बद्ध था। प्राचीन ग्रन्थों में पुराण का सम्बन्ध इतिहास से इतना घनिष्ट है कि बहुशः दोनों का एकत्व 'इतिहास पुराण' नाम से अनेक स्थानों पर उल्लिखित है।

भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान और कल्याणकारी क्रियाओं की जानकारी के लिए ये पुराण ही चिरकाल से आश्रयणीय रहे हैं। कृष्ण द्वैपायन भगवान् वेद व्यास ने अथक परिश्रम से वेदों का शाखा-प्रशाखा, ब्राह्मण, कल्पसूत्र, निरुक्त आदि की प्रक्रियाओं में विभाजन करके भी जब पूर्ण लोकोपकार में सफलता नहीं देखी, तब उन्होंने ध्यानस्थ होकर भागवतादि पुराणों, महाभारतादि इतिहासों की रचना कर वेदों के गूढतम संदेश देश को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प किया। उन्हीं की भास्वती कृपा से समुद्भूत समग्र पुराण राशि हमारे सामने उपस्थित होकर विश्व कल्याण में निरन्तर प्रवृत्त है। यह पुराण वाङ्मय सूक्ष्म विचार करने पर वर्तमान समस्त विश्व साहित्य की अपेक्षा सभी प्रकार शुद्ध, सभ्यभाषायुक्त, सुबोध, सारगर्भित कथाओं से युक्त और मधुरतम पद विन्यासों से समलंकृत है। इस प्रकार यह पुराण साहित्य सभी मनुष्यों के हृदयों को आकृष्ट कर कल्याण करने के लिए निरन्तर तत्पर है।